Vol.8 July 2014 No.1
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

आत्म-साक्षात्कार

-आचार्य भगवानदेव "चैतन्य"

तुम जिस हवा की
बेहो ाी में रुक गए हो
जिस संगीत पर मुग्ध हो गए हो
जिस झरने के पानी को
अमत समझ बैठो हो
इनके आस-पास ही कहीं मत्यु है,
विना ा है, अतप्ति है
प्यास-एक अन्तहीन प्यास।

यहाँ जो
छायादार वक्ष खड़े हैं
बाग-बगीचे हैं
फूल हैं, महक है
सब मात्र अनुभूतियों का ही छलावा है।

यहीं से वह मोड़ ाुरु होता है
जहाँ से व्यक्ति एक लम्बी
अन्तहीन यात्रा में भटक जाता है,
सदा-सदा के लिए.....

ये सब मायावी राक्षस के
साम्राज्य विस्तार हेतु
प्रयोग आने वाले-
हथियार हैं।

यह जंगल तुम्हारे ही लिए नहीं बना है
यह तो युग-युगान्त से है-
अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ।

सभी को यहीं से होकर गुज़रना होता है...
और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं।
इसी जंगल की राह में
एक स्थान वह भी है
जहाँ एक चिड़िया डाल पर बैठी
युगों-युगों से अमरत्व का सन्दे ा बाँट रही है।

जो कोई भी उसके बोल सुन पाता है
उसके हाथ लग जाते हैं-
कुछ ाी वत सत्य
जिन्हें कवच बनाकर
मुखौटाधारी राक्षसों से बचा जा सकता है।

और तब यही-
हवा, झरना, छायादार वक्ष,
बाग-बगीचे, फूल, महक
मत्यु नहीं- अमरता के स्रोत बन जाते हैं।
पूर्ण, निर्भ्रान्त।

(महर्षि दयानन्दधाम) महादेव
तह. सुन्दरनगर (जि.) मंडी (हि. प्र.) 174401

अनन्तरप्रकृतिः ात्रुः

अपने दे ा से जिसकी सीमा सटी होती है, वह राजा स्वभावतः ात्रु बन जाता है।

-चाणक्य

Brahmarpan July 2014 Vol. 8 No 1
आषाढ़–श्रावण 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. आत्म–साक्षात्कार 2
–आचार्य भगवानदेव "चेतन्य"
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्शन 7
4. युवा क्रान्तिकरियों की मुलाक़ात के अद्भुत क्षण 8
–डॉ. भवानीलाल भारतीय
5. "ब्रह्मयज्ञ की महिमा एवं उपयोगिता
–आचार्य भगवानदेव वेदालंकार 10
6. कैसा इतिहास पढ़ेंगे बच्चे? 14
–मक्खनलाल
7. लौटें सांस्कृतिक परम्पराओं की ओर ***–स्वामी रामदेव*** 17
8. स्कूलों में यौन ि ाक्षा : एक अभि ाप 19
–श्री रतनलाल गर्ग
9. अपने भील भाइयों को ईसाइयों के चंगुल से बचाएँ 21
–सत्यश्रवा
10. बढ़ती संस्कार–हीनता का कारणः विभक्त परिवार 25
–आचार्य संजयदेव
10. Rishi Dayanand's Disciple Shyamji Krishna Varma 28
-Br. Chitranjan Sawant, VSM
11. 'Great Battle' of Kohima 33
-Manimughdha S. Sharma

संपादकीय

दे ा में समान नागरिक संहिता लागू हो।

भारत को स्वतंत्र हुए 67 साल और संविधान को लागू हुए 64 साल हो चुके हैं परन्तु यहाँ अभी तक समान नागरिक आचार संहिता लागू नहीं हो सकी है। वि व के किसी भी दे ा में दोहरी नागरिक आचार संहिता नहीं है। किसी भी अन्य दे ा में नागरिकों के लिए अलग-अलग कानून लागू नहीं होते। इंग्लैण्ड, यूरोप, अमेरिका, आदि सभी पा चात्य राष्ट्रों में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक आचार संहिता लागू है। वहाँ संप्रदाय, जाति, धर्म या क्षेत्र के आधार पर कानूनों का निध ारिण नहीं होता। इसके अतिरिक्त मुस्लिम दे ाों में भी किसी वर्ग वि ोष के लिए अलग आचार संहिता या कानून-व्यवस्था नहीं है। वहाँ सभी पर ारियत और कुरान के कानून लागू किए जाते हैं। केवल भारत ही ऐसा दे ा है, जहाँ मुस्लिमों के तुष्टीकरण के लिए अलग ारियत कानून की व्यवस्था की गई है। उन पर संसद द्वारा बनाए गए कानून लागू नहीं होते।

इस विषय में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार संविधान के अनुच्छेद 44 में कहा गया है कि सरकार को प्रत्येक नागरिक के लिए समान आचार संहिता लागू करनी चाहिए। परन्तु इस प्र न पर मुस्लिम और ईसाई वोटों के लालच में काँग्रेस तथा अन्य तथाकथित सेकुलर दल मुसलमानों के स्वर में स्वर मिलाकर इनका विरोध करने लगते हैं।

13 जुलाई 2003 को सर्वोच्च न्यायालय ने एक मामले में निर्णय देते हुए कहा था कि यह अत्यन्त दुःख की बात है कि स्वाधीनता के इतने वर्ष बाद भी संविधान के नीति निर्दे ाक सिद्धान्तों के तहत आने वाले अनुच्छेद 44 पर अमल नहीं हो सका है। सर्वोच्च न्यायालय का मानना है कि समान

नागरिक संहिता लागू करने के लिए संसद को कानून बनाना चाहिए। इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा।

दे ा के स्वाधीन होने के बाद संसद में काँग्रेस द्वारा हिन्दूकोड बिल पे ा किया गया जिसके अन्तर्गत हिन्दू समाज में, जिसमें बौद्ध, जैन तथा सिख भी ाामिल हैं, विवाह के बाद विवाद होने पर तलाक को वैध बना दिया गया। हिन्दू कोड बिल का हिन्दू धर्मसंघों, ांकराचार्यों और धर्माचार्यों ने कड़ा विरोध किया। इसे परिवार को तोड़ने वाली प्रवत्ति मानते हुए राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दू कोड बिल पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। परन्तु जवाहरलाल नेहरु (प्रधानमंत्री) ने राष्ट्रपति के विरोध की परवाह न करके हिन्दूकोड बिल को पास करवा ही लिया।

इसके विपरीत धर्मनिरपेक्षता के समर्थक सेकुलर दल कभी यह हिम्मत नहीं कर सके कि मुसलमानों की महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के कानूनों को बदलवा कर उनकी कुरीतियों का भी निराकरण करें। मुल्ला-मोलवियों का यह कहना निराधार है कि मुस्लिम ारहा रसूल इस्लाम हज़रत मोहम्मद के निर्दे ाों पर आधारित है इसलिए इसमें किसी तरह का बदलाव नहीं हो सकता। दुनिया में लगभग अस्सी मुस्लिम दे ा हैं। इनमें दो-तीन दे ाों को छोड़कर सभी ने आधुनिक जरूरतों के मुताबिक ारियत कानूनों में सं ाोधन कर लिए हैं। तुर्की के राष्ट्राध्यक्ष कलाम अतातुर्क ने मुस्लिम महिलाओं के उत्पीड़न से संबंधित बहुपत्नी प्रथा पर पाबन्दी लगा दी थी। कई मुस्लिम दे ाों ने चोरी करने पर चोर के हाथ काटने की सजा पर रोक लगा दी। इसी तरह भारत में 1985 तक तलाक ाुदा मुस्लिम महिलाओं को भारतीय दंड संहिता की धारा 125 के तहत अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता पाने का अधिकार था। लेकिन एक बहुचर्चित मामले में 62 साल की

ाहबानो को उसके पति ने 30 साल के विवाहित जीवन के बाद तलाक दे दिया। न्यायालय ने अपने फैसले में उसके पति को प्रतिमास अपनी पत्नी ाहबानो को गुजारा भत्ता देने का आदे ा दिया। इस फैसले के विरुद्ध मुस्लिम सांसदों और सेकुलर राजनीतिक दलों ने हंगामा मचा दिया। इसके परिणामस्वरूप 1986 में सरकार ने एक विधेयक पारित करके तलाक ुदा मुस्लिम महिलाओं को गुजारा भत्ता पाने के हक़ से वंचित कर दिया।

यदि दे ा में समान नागरिक संहिता न लागू की गई तो विभिन्न धर्मों के लोगों में जनसंख्या वद्धि का अनुपात गड़बड़ा जाएगा। क्योंकि मुसलमानों को चार-चार विवाह करने की छूट है जबकि हिन्दू दूसरा विवाह भी नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त परिवार नियोजन का दुष्प्रभाव भी हिन्दू परिवारों पर पड़ता है। इसका एक दुष्परिणाम यह भी सामने आया है कि यदि किसी हिन्दू को दूसरा विवाह करना हो तो वह मुस्लिम कानून के तहत इस्लाम में धर्मान्तरित होकर ऐसा कर सकता है। इससे भी हिन्दुओं की संख्या घट रही है। इसके अलावा हिन्दू 'हम दो हमारे दो' के सिद्धान्त पर चल रहे हैं जबकि मुसलमान हम पाँच हमारे पचास के हिसाब से बढ़ रहे हैं। इससे दे ा की जनसंख्या के अनुपात में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। यदि यह कुचक्र जारी रहा तो कुछ समय बाद जब हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएँगे तो एक और नए पाकिस्तान की माँग उठ खड़ी होगी। हमें दे ा के हित और भविष्य को ध्यान रखकर विचार करने की आव यकता है। अतः दे ा में सभी के लिए समान नागरिक आचार संहिता लागू होनी चाहिए जैसा चलन वि व के सभी दे ाों में है।

संपादक

सांख्य द नि (अध्याय-1, सूत्र-79)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

इस सूत्र के साथ सूत्रकार कार्यकारणभाव के प्रसंग में सांख्य के सुविदित सत्कार्यवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं, सूत्र है-

नासदुत्पादो न ंगवत्।।79।।

अर्थ - (न) नहीं (असदुत्पादः) असत् की उत्पत्ति होती है (न ंगवत्) मनुष्य के सींग के समान।

भावार्थ - संसार में जिस वस्तु का कभी अस्तित्व ही नहीं होता है, वह असत् कहलाती है, जैसे हम देखते हैं कि किसी मनुष्य के सींग नहीं होता, वैसे ही असत् वस्तु की उत्पत्ति भी नहीं होती। जो वस्तु पूर्णतया असत् है उसका कभी अस्तित्व नहीं होता। मनुष्य के सींग नहीं होते- वे न कभी हुए हैं और न कभी भविष्य में होंगे। जिस वस्तु के बारे में हम -'उत्पन्न होना' कहते हैं, वह अपनी उत्पत्ति से पहले एकदम असत् या अस्तित्वरहित हो ऐसा नहीं होता। उसका अस्तित्व अपने कारण में सदैव बना रहता है। इसलिए प्रत्येक कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व भी कारण रूप में सत् होता है। एकदम असत् वस्तु की उत्पत्ति असंभव है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

- स्वस्थ ारीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।
- आलस्य मनुष्यों के ारीर में रहने वाला घोर ात्रु है।
- हमे अपने उत्तरदायित्वों को गंभीरता से लेना चाहिए।
- परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
- कर्मों में कु ालता ही योग है।
- कला जीवन का रहस्य है।
- कवि का काव्य ही उसकी आत्मा का सत्य है।

युवा सन्यासी स्वामी विवेकानन्द तथा क्रान्तिगुरु पं. यामजीकृष्ण वर्मा की मुलाकात के अद्‌भुत क्षण

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

स्वातंत्र्य क्रान्ति का ंखनाद करने वाले पं. यामजीकृष्ण वर्मा का जन्म क्रान्ति वर्ष 1857 की चार अक्टूबर को कच्छ के एक व्यवसायी के यहाँ हुआ था। युवा काल में वे ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये, उनसे संस्कृत पढ़ी और प्रसिद्ध विद्या वि ाारद प्रो. मोनियर विलियम्स की प्रेरणा से इंग्लैण्ड जाकर संस्कृत का अध्यापन किया, साथ ही बैरिस्टर बने। कालान्तर में उन्होंने इण्डिया हाउस की स्थापना राजधानी लन्दन में की जो आगे चल कर सावरकर, मदनलाल धींगड़ा, भिकाई जी कामा आदि क्रान्तिकारियों का ारणगाह बना।

इंग्लैण्ड जाने से पहले याम जी ने कुछ काल तक अजमेर में वकालत भी की। इसी समय उनकी मुलाक़ात स्वामी विवेकानन्द से हुई। वे संन्यास ग्रहण के प चात् भारत भ्रमण करते हुए अजमेर आये थे। 1891 में उन्होंने आबू पर्वत में ठाकुर मुकुन्द सिंह के घर पर निवास किया था। यही समय था जब अजमेर के आर्य नेता हरविलास ाारदा ठाकुर मुकुन्द सिंह से मिलने आबू आये। स्वामी विवेकानन्द के तेजस्वी स्वरूप तथा उनकी प्रबल दे ाभक्ति ने ाारदा जी को अत्यधिक प्रभावित किया। दोनों के बीच विस्तत विम र्ा होता रहा। ाारदा जी ने स्वामीजी को अजमेर आने का निमन्त्रण दिया और अपने घर पर ही ठहरने का अनुरोध किया। स्मरण रहे कि तब तक स्वामी जी को राष्ट्रव्यापी ख्याति नहीं मिली थी। 1891 का वर्ष और दिसम्बर का महीना, स्वामी जी खेतड़ी

से अचानक अजमेर आये और हरविलास ाारदा के घर ठहरे। वार्तालाप के प्रसंग में स्वामी जी को उन्होंने पं. याम जी के बारे में बताया और कहा कि वे संस्कृत के प्रौढ़ विद्वान् हैं। आबू से लौटकर ाारदा जी ने याम जी को स्वामी विवेकानन्द का परिचय दिया और उनकी धर्म प्रचार की लगन तथा दे ाभक्ति की चर्चा की। साथ ही यह भी कहा कि वे आपसे मिलना चाहते हैं। स्वामी जी ने ाारदा जी के यहाँ तीन दिन तक निवास किया, तत्प चात् ब्यावर चले गये। उनके अजमेर से ब्यावर जाने के दो दिन बाद यामजी मुम्बई से अजमेर लौट आये और अपने मित्र ाारदा जी से मिलने गये। वे भी स्वामी जी से मिलने के लिए उत्सुक थे। स्वामी जी के ब्यावर चले जाने का समाचार याम जी को मिला तो वे ब्यावर जा पहुँचे और उसी दिन उन्हें लेकर अजमेर आ गये। उन्होंने स्वामी जी को अपने बंगले पर ही ठहराया।

स्वामी जी का याम जी के यहाँ लगभग पन्द्रह दिनों तक निवास रहा। ये तीनों व्यक्ति-हर विलास ाारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा याम जी-संध्या समय घूमने निकलते और विभिन्न विषयों पर चर्चा करते। उनकी विवेचना के विषय होते-हिन्दू धर्म की वर्तमान दुर्द ा, सामाजिक स्थितियाँ, संस्कृत भाषा, अध्यात्म तथा वेद-वेदान्तादि दा ार्निक विषय। स्वामी जी याम जी के संस्कृत वैदुष्य पर मुग्ध थे। याम जी भी स्वामी जी के धर्मप्रेम, वि ाद धर्मज्ञान, स्वदे ा प्रेम तथा भारत भक्ति से प्रभावित थे। उन्हें इस बात का गर्व था कि वे स्वामी दयानन्द तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे दो तेजस्वी संन्यासियों के सम्पर्क में आये हैं। याम जी तथा ाारदा जी के सान्निध्य में दो सप्ताह बिताकर विवेकानन्द ने गुजरात की ओर प्रस्थान किया। स्वल्प समय बाद याम जी ने भी वक़ालत छोड़ दी और बाद में वे रतलाम तथा जूनागढ़ राज्यों में उच्च पद पर कार्य करते रहे। अन्ततः 1897 में वे इंग्लैण्ड चले गये और क्रान्तिकारियों के गुरु बने।

315, ांकर कालोनी, श्रीगंगानगर

ब्रह्मयज्ञ की महिमा एवं उपयोगिता

–आचार्य भगवानदेव वेदालंकार, (वैदिक प्रवक्ता)

माताओ! बहिनो! प्रिय सज्जनो! ऋषियों की मन्यता के अनुसार पाँच प्रकार के महायज्ञ होते हैं।

"ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नयज्ञं पितयज्ञं च यथा ाक्ति न हापयेत्।।

(मनुस्मति –अध्याय 4– लोक 21)

अर्थात्– इन पाँचों यज्ञों में ऋषि–यज्ञ का अभिप्राय सन्ध्योपासना अथवा ब्रह्मयज्ञ है। इसके अतिरिक्त वेदादि ाास्त्रों का पढ़ना–पढ़ाना और योगाभ्यास हैं। ऋषियों ने इसी ब्रह्मयज्ञ के द्वारा सब कुछ प्राप्त किया। मनुष्य के कर्त्तव्य कर्मों में यह पहला यज्ञ है। ोष यज्ञ ब्रह्मयज्ञ के बाद किये जाते हैं, जैसे– देवयज्ञ (अग्निहोत्र), भूतयज्ञ (बलिवै वदेव यज्ञ), नयज्ञ (अतिथि यज्ञ), पितयज्ञ (माता–पिता और आचार्यों की सेवा करना) इन सभी यज्ञों को यथा ाक्ति करना चाहिए।

ब्रह्मयज्ञ का अभिप्राय– 'ब्रह्म' नाम ई वर का है 'यज्ञ' नाम श्रेष्ठ कार्यों का है। ब्रह्म यज्ञ का दूसरा नाम 'सन्ध्योपासना' है। ई वर का अच्छी प्रकार से ध्यान करना, मनन–चिन्तन करना 'सन्ध्या' कहलाती है। इस प्रकार सन्ध्या करने वाले को अथवा 'ब्रह्म' की उपासना करने वाले को 'ब्रह्मचारी' भी कहा जाता है। **"ब्रह्म इष्णन् चरति इति ब्रह्मचारी"।** ब्रह्म की खोज करने वाला अथवा 'ब्रह्म' के प्रति समर्पण–भाव रखने वाला व्यक्ति महान है। वह व्यक्ति सद्गहस्थी, वानप्रस्थी तथा संन्यासी आदि ब्रह्म की खोज करने वाला हो सकता है।

'ब्रह्मयज्ञ की महिमा'

इसलिए महर्षि दयानन्द लिखते हैं– "प्रथम ारीर ाुद्धि अर्थात् स्नान करके सन्ध्योपासना का आरम्भ करे। प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है, कि वह न्यून से न्यून एक घण्टा प्रतिदिन सन्ध्योपासना में लगाए।" इस लोक और परलोक में सुख और ाान्ति चाहने वाले मनुष्यों को प्रातःसायं दोनों समय श्रद्धापूर्वक सन्ध्योपासना करनी चाहिए।

ब्रह्मयज्ञ करने से मनुष्य का आचार और अध्यात्म बनता है। **"सन्ध्यायन्ति सन्ध्यायते वा परब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या"** अर्थात्

जिसमें परमे वर का भली-भाँति ध्यान करते हैं वह सन्ध्या कहलाती है। सो रात और दिन के संयोग के समय दोनों सन्धि बेलाओं में सब मनुष्यों को परमे वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए"। (-दयानन्द पञ्च महायज्ञ विधि)

ब्रह्मयज्ञ (संध्या) क्यों करे- सब गुरुओं का गुरु, आचार्यों का आचार्य, न्यायाधी ाों का न्यायाधी ा और राजाओं का राजा परमे वर है। योगद र्शन के आचार्य महर्षि पतञ्जलि का इस विषय में प्रमाण है- **"पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"** (योगद० समाधिपाद 26 सूत्र)

अर्थात् वह ई वर पूर्वादि गुरुओं का भी गुरु है, काल सीमा उसके लिए नहीं है। **"तस्य वाचकः प्रणवः"** (योग० समा० सूत्र-27) उस आदि गुरु परमात्मा का मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' है उस परमे वर की कृपादष्टि और सहायता से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो जाते हैं। वही परमे वर सर्वरक्षक और सष्टिकर्ता है। 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' के ऋषि ने लिखा है-

"उद्यन्तमस्तं यन्तमादित्यमभिध्यायत् कुर्वन्।
ब्राह्मणो विद्वान् सकलं भद्रम नुते"।

अर्थात् जो मनुष्य सूर्य के उदय तथा अस्त होते समय परम ब्रह्म का चिन्तन करता है, वह मनुष्य सभी प्रकार के कल्याण को प्राप्त करता है।

"तस्माद् अहोरात्रस्य संयोगे ब्राह्मणः सन्ध्यामुपासीत्" इसलिए ब्राह्मणों को दिन और रात की संधि वेला में (प्रातः और सायं) सन्ध्या करनी चाहिये।

ऋषयो दीर्घं सन्ध्यात्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रज्ञां य ा च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च।। (मनुस्मति०2-94)

अर्थात् ऋषियों व विद्वान् आचार्यों ने, ब्रह्मचारी और सद्गहस्थों ने सन्ध्या करके, दीर्घायु, उत्तम प्रज्ञा-बुद्धि, य ा, कीर्ति और ब्रह्मतेज की प्राप्ति की। अतः सन्ध्या करने वाला पुरुष भाग्य ाली और महान् तपस्वी होता है।

पूर्वां सन्ध्या जपस्तिष्ठन्नै ामेनो न्यपोहति।
पि चमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवा कृतम्।।

(मनुस्म० 2-102)

अर्थात् प्रातःकाल सन्ध्या करने से रात्रि के पापों से मुक्ति हो जाती है और सायंकाल में सन्ध्या करने से दिन-भर के पापों से मुक्ति हो जाती है। इसी सम्बन्ध में आचार्य चाणक्य ने ब्रह्मयज्ञ को जीवन का मूलाधार बतलाया है-

ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) करने की विधि-

'ब्रह्म' की उपासना वैदिक रीति के अनुसार, योग्य गुरु के परामर्श से, अच्छी प्रकार से ज्ञान ग्रहण करके विधिपूर्वक करनी चाहिए। बहज्जाबालोपनिषद् में लिखा है-

"सन्ध्या सकु ोऽहरहरुपासीत्" (बहज्जाबालोपनिषद् 6-8)

अर्थात्- ुद्ध-पवित्र एकान्त स्थान पर विधिपूर्वक आसन लगाकर, प्रतिदिन दोनों समय सन्ध्या करनी चाहिये। पहले जल आदि से बाह्य ारीर की ुद्धि और फिर राग-द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, आदि के त्याग से भीतर की ुद्धि करनी चाहिए। आसन कु ा-घास का अथवा कपड़े का होना चाहिए। ेर, चीते आदि की खाल का आसन नहीं होना चाहिए क्योंकि उसमें हिंसा छिपी हुई होती है। मनु महाराज इस विषय में लिखते हैं-

"ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थौं चानुचिन्तयेत्।
काया क्ले ाां च तन्मूलान् वेदतत्वार्थमेव च।।

(मनुस्मति-अध्याय 4- लोक 92)

अर्थात् दो घड़ी रात्रि से उठे और धर्म का चिन्तन करे। कर्त्तव्य-कर्मों के विषय में सोचे। जीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न करे। वेदादि सत्य ाास्त्रों के अर्थों का चिन्तन करे। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सन्ध्योपासना करने से पहले प्राणायाम अव य करना चाहिए क्योंकि प्राणायाम करने से इन्द्रियाँ व ा में हो जाती हैं। आत्मा और मन की स्थिति ठीक हो जाती है। इसी दष्टि से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना अनुभव संसार के समक्ष रखते हुए लिखा है कि-"ब्रह्मयज्ञ करने से परमे वर की कृपा और दया प्राप्त होती है। परमे वर की कृपा दष्टि और सहायता से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो जाते हैं। जैसे ीत से पीड़ित पुरुष के अग्नि के पास जाने से ीत की निवत्ति हो जाती है वैसे ही परमे वर के गुण-कर्म-स्वभाव से जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसीलिए

परमे वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए।"
महर्षि पतञ्चलि ने योगद र्शन में ई वर-भक्ति पर बल दिया है - **'ई वरप्रणिधानाद्वा'** (समाधिपाद सूत्र-23) ई वर के प्रणिधान (भक्ति) से निकटता प्राप्त होती है। अर्थात् ई वर-भक्त समाधिस्थ होता है और जब मनुष्य अनन्यचित्त होकर ई वर की सन्ध्योपासना में तत्पर होता है तब ई वर अपने भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर उस पर कृपा वष्टि करता है।

संध्या में मन कैसे लगे?

ब्रह्मयज्ञ या सन्ध्या करने वाले अधिकां ा लोग प्रायः प्र न करते हैं कि सन्ध्या में अथवा ई वर-भक्ति में मन कैसे लगे? इसका समाधान यही है कि ई वर-भक्ति का योग सीखें। ब्रह्म-ज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थों, वेदों, उपनिषदों का और ऋषियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। इस विषय में महर्षि पतञ्जलि का आदे ा है- **"तज्जपस्तदर्थ भावनम्"** (योगद र्शन समाधिपाद सूत्र-28) अर्थात् ई वर के सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' का जाप और ई वर के गुणों का चिन्तन करना ही ई वरप्रणिधान अर्थात् ई वर की भक्ति है। इसी प्रकार गायत्री-मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसी के अनुसार अपना चाल-चलन बनाएँ। परन्तु जप मन से करना चाहिए। अपनी आत्मा को परमे वर की आज्ञानुसार समर्पित कर दें। इससे आत्मा का बल इतना बढेगा कि वह पर्वत के समान दुःख आने पर भी नहीं घबरायेगा और कठिन से कठिन दुःख को भी सहन कर सकेगा। किसी कवि ने सत्य ही कहा है-

"ओम् नाम सबसे बड़ा, उससे बड़ा न कोय।
जो ओम् का सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।।
दो बातन को याद कर जो चाहे कल्याण।
नारायण इक मौत को दूजे श्री भगवान।।

94-विकासनगर, फेस-3, निकट बालाजी मंदिर
(हस्तसाल एरिया) नई दिल्ली-59
मो. 9250906201

कैसा इतिहास पढ़ेंगे बच्चे?

–मक्खनलाल

(ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या को लेकर इतिहासकारों में वैचारिक टकराहट तो स्वाभाविक है लेकिन एक–दो द ाक से स्कूलों के कोर्स में इतिहास के स्वरूप को लेकर तीखी बहस चल रही है। पिछली एनडीए सरकार ने एनसीईआरटी की इतिहास की किताबों में कुछ फेरबदल किए। इसका दे ा के कई इतिहासकारों ने जबर्दस्त विरोध किया और वाजपेयी सरकार पर इतिहास समेत पूरी ि ाक्षा के भगवाकरण का आरोप लगाया। बाद में जैसी आ ा थी यूपीए सरकार ने पिछले निर्णयों की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की। एक बार फिर पाठ्यक्रम में बदलाव की बात चल पड़ी। आखिर यह सिलसिला कब तक चलेगा? बच्चों को इतिहास किस रूप में पढ़ाया जाए, क्या कभी इस पर आम सहमति बन सकेगी? कुछ इन्हीं सवालों पर कें द्रित है यह लेख–संपा.)

पुस्तकों में बार–बार न हो बदलाव

चार द ाक से चली आ रही एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों, खासकर इतिहास की पुस्तकों के भगवाकरण का आरोप असत्य, भ्रामक, एक विपरीत दि ा में ले जाने वाला है। मुझे तो ऐसे लोगों की बुद्धि पर आ चर्य होता है। हिटलर को हमने महिमामंडित किया है या महात्मा गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का नाम पाठ्यपुस्तकों से हटा दिया गया है, इसका जवाब तो वे इतिहासकार ही देंगे, जिन्होंने मॉडर्न इंडिया की किताबें लिखी हैं। मैं प्राचीन भारतीय इतिहास से संबद्ध रहा हूँ, इसलिए मैं उसके बारे में ही अपनी राय रख सकता हूँ। सबसे पहली बात तो यह है कि इंडियन हिस्ट्री काँग्रेस (आईएचसी) ने मेरी पुस्तक 'इंडेक्स ऑफ एरर्स' नामक एक पुस्तक निकाली थी, जिसमें ढूँढ़–ढूँढकर मेरी पुस्तकों की गलतियाँ निकाली गई थीं। मैंने उसके हर आरोप का उत्तर उद्धरण के साथ अपनी पुस्तक 'फैलेसीज इन दी आईएचसी रिपोर्ट' में दिया है और इसकी ऑफि ायल कॉपी आईएचसी को भी भेजी, लेकिन आज तक किसी ने इसका जवाब देने की ज़हमत नहीं उठाई या कहिए हिम्मत नहीं दिखाई। इतिहास के भगवाकरण का जो आरोप ये मुझ पर लगा रहे हैं, इसका जवाब मैंने वामपंथी इतिहासकारों द्वारा एनसीईआरटी के लिए

लिखी गई उनकी पुस्तकों से ही दिया है। जो ये लिखते हैं, वह ज्ञान की बात हो जाती है और यदि वही बात मैं लिख दूँ, तो वह भगवाकरण कैसे हो गया? भगवा (केसरिया) रंग तो हमारे तिरंगे में भी है, तो क्या उसे वहाँ से निकाल देंगे ये लोग!

जहाँ तक बात सिन्धु घाटी सभ्यता को सरस्वती नदी से जोड़ने की है, तो मैं यही कहना चाहूँगा कि प्रमाण इसकी पुष्टि करते हैं। सरस्वती नदी के किनारे 1100 पुरातात्विक स्थल मिले हैं, जबकि सिन्धु नदी के किनारे मात्र 110 ही ऐसे स्थल मिले हैं। अब कोई भी पढ़ा-लिखा इंसान यह बात आसानी से समझ सकता है कि इस सभ्यता का मुख्य केन्द्र कहाँ हो सकता है। सरस्वती के बारे में मैं ही नहीं, वामपंथी इतिहासकार इरफान हबीब साहब ने भी वर्ष 1952 के अपने लेख में अमेरिका से छपने वाले ज्योग्रॉफिकल जर्नल में इसका जिक्र किया है। इस लेख के पर्चे वर्ष 1992 में आईएचसी में भी पढ़े गए। इसमें हबीब साहब ने लिखा है कि वैदिक नदी सरस्वती सिरसा (वर्तमान में हरियाणा) में बहती थी। आ चर्य है कि अब अचानक उसका स्थान ये लोग अफगानिस्तान क्यों बताने लगे हैं?

वस्तुनिष्ठ इतिहास के संबंध में मैं यही कहना चाहूँगा कि ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या अलग-अलग हो सकती है और लोकतान्त्रिक समाज में सभी को अपनी बात रखने का हक़ है। लेकिन अपनी बात इतिहासकार ोध-पत्र तक ही सीमित रखें, तो अच्छा होगा। स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में विद्यार्थियों को वही पढ़ाया जाना चाहिए, जो विवादास्पद न हो, सर्वमान्य हो। देखिए, बार-बार पाठ्यक्रम बदलने से दे ा की ि ाक्षा व्यवस्था और बच्चों के भविष्य पर बहुत बुरा और दूरगामी असर पड़ेगा। केन्द्र की यूपीए सरकार ने एक सर्कुलर निकाला था, जिसमें कहा गया कि चूँकि स्कूलों में आधा से ान हो चुका है इसलिए दे ा के तीन करोड़ बच्चों के हित में पाठ्यपुस्तकों में कोई बदलाव नहीं किया जाएगा। फिर सरकार ने इतिहासकारों का एक पैनल बना दिया, जिसमें सत्तार जी, वरुण डे आदि इतिहासकार ाामिल हैं। इनसे कहा गया कि आप किताबों की समीक्षा कर यह बताएँ कि कहीं बच्चों को भ्रामक और तथाकथित भगवा इतिहास तो नहीं पढ़ाया जा रहा है। आ चर्य की बात तो यह है कि इस पैनल ने मात्र तीन दिन में अपना

फैसला सुना दिया है, जबकि सरकार ने उसे इसके लिए 15 दिन का समय दिया था। मुझे इस पैनल के इतिहासकारों की विद्वता पर सन्देह नहीं है लेकिन ये लोग वामपन्थी इतिहासकारों के दबाव में काम कर रहे हैं और इन्हें तो बस डॉटेड लाइन पर हस्ताक्षर करने थे।

यूपीए सरकार और पैनल के इतिहासकार ि ाक्षा को जिस एडहॉक निर्णय के रास्ते पर ले जा रहे थे, उससे दे ा की ि ाक्षा पद्धति बर्बाद हो जाएगी। एनडीए सरकार ने सिर्फ इतिहास की नहीं, सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों में लोकतांत्रिक ढंग से परिवर्तन किए थे। वर्ष 1986 में स्वर्गीय राजीव गाँधी की पहल पर ि ाक्षा पर राष्ट्रीय नीति की समीक्षा हुई थी। बाद में इसकी रिपोर्ट वर्ष 1992 में रिव्यू की गई लेकिन कई कारणों से यह लागू नहीं की जा सकी। दोनों बार सत्ता में काँग्रेस पार्टी थी। बाद में ि ाक्षा में नैतिकता और इसमें सुधार के लिए संसद ने काँग्रेस नेता एस. बी. चौहान की अध्यक्षता में एक संसदीय समिति बनाई, जिसमें सभी पार्टियों के लोग ाामिल थे। इसकी रिपोर्ट में कहा कि दे ा की पूरी ि ाक्षा व्यवस्था को नए सिरे से देखने की जरूरत है और वैल्यू एजूके ान पर जोर दिया जाना चाहिए। एनडीए सरकार इस समिति की रिपोर्ट पर काफी गंभीर थी और इसी के अनुसार कदम उठाए गए। एनडीए सरकार ने अचानक स्कूलों से पाठ्यपुस्तकें नहीं हटाईं। जब नई पुस्तकें छपकर आ गईं तभी बिना रिवाइज हुई पुरानी पुस्तकों को हटाया गया। इसमें चार साल का समय लगा। लेकिन वामपंथी इतिहासकार इन किताबों को तत्काल हटाने की माँग कर रहे थे। कल जब कोई नई सरकार बनेगी और वह भी ऐसा ही करेगी, तब इनके पास उन्हें रोकने का क्या नैतिक आधार होगा? ये लोग जिस ने ानल स्टीयरिंग कमेटी ऑफ हिस्ट्री को फिर से बहाल करने की माँग कर रहे थे। वह चीज क्या है भला? मैंने तो इसका नाम तक नहीं सुना है। ये पहले यह तो बताएँ कि कौन लोग इसके सदस्य थे और वे कब इसके सदस्य बने? बच्चों को क्या परोसा जाए, इस बात पर आम सहमति होनी चाहिए। 'तू और मैं' की बात पाठ्यपुस्तकों के स्तर पर नहीं आनी चाहिए।

प्रस्तुति–एन. अख्तर

लौटें सांस्कृतिक परम्पराओं की ओर

–स्वामी रामदेव

कैंसर, हृदयरोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं मोटापा आदि रोगों का भय हर किसी को आतंकित कर रहा है। फल, सब्जियाँ, दालें, दूध व अन्न आदि जीवनदायी तत्व कीटना ाकों एवं रसायनों के उपयोग से दूषित हो रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपनी खतरनाक इकाइयाँ भारत के गरीब एवं पिछड़े क्षेत्रों में लगाकर, वायु एवं जल में खतरनाक रसायनों को उत्सर्जित कर वहाँ रहने वाले लोगों को मौत के मुँह में धकेल रही हैं। हवा में छोड़ी जाने वाली विषाक्त गैसें एवं कैमिकल्स वर्षा के बाद जल एवं मिट्टी में मिलकर भूमि को बंजर बना देते हैं एवं जल पीने योग्य नहीं रह जाता। परिणामतः कैंसर, टीबी एवं अन्य ख़तरनाक़ वास आदि की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। इस प्रदूषण से तन एवं मन जब दोनों दोषपूर्ण हो जाते हैं, तब रोग, भय, भ्रम, अ ाान्ति व दुःख पनपने लगते हैं। पूरे वि व में मौत का पर्याय बने कैंसर के तम्बाकू के बाद सबसे बड़े कारण रासायनिक खेती, कीटना ाक एवं औद्योगिक प्रदूषण हैं। आज भारत में 20 से 25 लाख कैंसर रोगी हैं तथा प्रतिवर्ष लगभग सात लाख नए कैंसर रोगी चिह्नित हो रहे हैं। यह भी दहलाने वाला तथ्य है कि प्रतिवर्ष चार लाख से अधिक रोगी कैंसर के कारण मौत के मुँह में समा जाते हैं। बोनमैरो ट्रांसप्लांट कराने के बाद भी कई लोगों को पुनः रक्त कैंसर हो रहा है। इसके कारण हैं वे तत्व जो कैंसर पैदा करने के लिए जिम्मेदार हैं। वे तो ज्यों के त्यों हमारे सामने विद्यमान हैं। वही दूषित वायु, रासायनिक भोजन, फास्ट फूड, पिज्जा, बर्गर, कोल्ड ड्रिंक्स, धूम्रपान आदि द्वारा लोग कैंसर को आमंत्रण दे रहे हैं। तम्बाकू निर्माता कम्पनियाँ मासूम लोगों

को दौलत के बदले जिन्दगी नहीं, मौत दे रही हैं। इसलिए मैं तम्बाकू के उत्पाद बनाने वालों को मानवता का ात्रु एवं मौत का सौदागर कहता हूँ। आकर्षक विज्ञापन देकर तम्बाकू और उसके उत्पाद बेचने वाली इन कम्पनियों पर लाखों बेकसूर लोगों की मौत का मुकद्दमा चलना चाहिए। तम्बाकू के कारण बीमार हुए लोगों के इलाज एवं मौत के बाद अनाथ हुए बच्चों के पालन-पोषण का खर्चा इन कम्पनियों से लिया जाना चाहिए। केन्द्र एवं राज्य सरकारों का भी दायित्व बनता है कि उन्हें दे ा में ऐसा वातावरण बनाना चाहिए, जिससे कि धूम्रपान को बढ़ावा न मिले। दुर्भाग्य से ाराब एवं तम्बाकू माफिया राज्य एवं केन्द्र सरकारों में निर्वाचित होने वाले बहुत से बलवान व प्रभाव ाली लोगों को करोड़ों रुपए चन्दे के रूप में देते हैं। अतः कानून की पकड़ से ये लोग हमे ा बाहर रहते हैं। इसी तरह खेती में प्रयुक्त होने वाले खतरनाक कीटना ाक एवं रासायनिक खाद बनाने वाले लोग भी अपनी ाक्ति एवं सम्पत्ति के बल पर खुलेआम मौत का व्यापार कर रहे हैं।

कैंसर आदि रोगों के लिए जिम्मेदार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर जब नियन्त्रण होगा तभी एक स्वस्थ, समद्ध एवं स ाक्त भारत का निर्माण संभव हो सकेगा। हमारी सरकारों को जितना पैसा ये तम्बाकू, ाराब एवं रसायन बेचने वाले लोग टैक्स के रूप में देते हैं, उससे ज्यादा खर्च उनके उत्पादों के कारण पैदा हुई खतरनाक बीमारियों के उपचार के लिए सरकारों को खर्च करना पड़ता है। दुनिया को राह दिखाने वाले तमाम महापुरुषों के इस दे ा में एक स्वस्थ परम्परा पैदा होनी चाहिए। आइए, फिर से हम अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आध्यात्मिक मूल्यों की ओर लौटें, क्योंकि इसी में राष्ट्र एवं वि व के लोगों का कल्याण व स्वास्थ्य निहित है।

स्कूलों में यौन ि ाक्षा : एक अभि ााप

–श्री रतनलाल गर्ग

संस्थापक मानवता मि ान

समाचार पत्रों द्वारा आपको भी ज्ञात होगा कि हमारी सरकारें स्कूलों में प्राथमिक कक्षा से ही सेक्स एजूके ान अर्थात् यौन ि ाक्षा पाठ्यक्रम अनिवार्य करने का विचार कर रही थी। अपनी अमूल्य संस्कृति को खत्म करने एवं मनुष्यता को प ाुता में परिवर्तित करने का ये खतरनाक कार्यक्रम है। हमारे दे ा में एक ओर बाल विवाह अपराध है तो दूसरी ओर बाल अवस्था में ही यौन ि ाक्षा देने का कार्यक्रम ये कैसी विडम्बना है? विदे ाों में जहाँ यौन ि ाक्षा दी जा रही है उनके भयानक दुष्परिणाम हुए हैं– (ये रिपोर्ट हमारी नहीं बी.बी.सी. की है।)

1. इंग्लैण्ड में ये ि ाक्षा लगभग 15 वर्ष पहले कि ाोर अवस्था के छात्रों से (बाल अवस्था से नहीं) ाुरू की गयी थी और अब उन्हीं स्कूलों में गर्भपात केन्द्र खोलने पड़ रहे हैं।
2. गर्भ निरोधक औषधियाँ माध्यमिक विद्यालयों में बाँटी जा रही हैं।
3. प्रतिवर्ष 10 हजार कि ाोर अवस्था की लड़कियाँ गर्भपात कराने को मज़बूर हैं।

जब यह द ाा हमारे सामने है तो फिर भी सरकार इसको क्यों लागू करने का विचार कर रही है। यौन ि ाक्षा चालू करने की बात के पीछे सरकारें ये दलील देती हैं कि दे ा में एड्स की बीमारी बढ़ रही है और इसको रोकने के लिए यौन ि ाक्षा देनी जरूरी है। यौन ि ाक्षा चालू होने के बाद कौन-सी गारंटी है कि एड्स के रोगी नहीं बनेंगे। एक छोटे नुक़सान से बचने के लिए सेक्स की पूरी छूट दे देना पूरी मनुष्यता को प ाुवत्ति में परिवर्तित करना है और मनुष्य के संयम न रखने के आगे घुटने टेक देना है। सरकार का यह कदम जाने या अनजाने में अपनी संस्कृति एवं मनुष्यता के विपरीत होगा। इस लापरवाही से भयंकर चरित्र की हानि होगी, जिसको बाद में सुधारना असंभव होगा। एनडीए सरकार को इस पर विचार

करना चाहिए।

एक सर्वेक्षण द्वारा एड्स की बीमारी भिन्न-भिन्न आयु में इस प्रकार पाई गई है:-

आयु	प्रति ात
0-15	04.3
16-19	08.5
20-29	24.5
30-49	56.5
50 से ऊपर	06.2

ऊपर के आँकड़ों से विदित होता है कि एड्स की बीमारी स्कूल की आयु में नगण्य है 30 की आयु और विवाहित युगलों में 56% है। तो अब आप ही सोचिए कि एड्स को रोकने का प्रयास किस आयु के व्यक्तियों पर अधिक आव यक है। क्या बेचारे भोले-भाले प्रकृति में खेलते हुए बच्चों को यौवन की बातों से प्रभावित करें? बुखार किसी को हो और इंजेक् ान किसी और को लगा रहे हैं, यह कैसी विडम्बना है?

वि वविद्यालयों में यौन ि ाक्षा का ज्ञान कराना उचित हो सकता है। प्राइमरी, माध्यमिक ि ाक्षा की 12 वीं कक्षा तक तो बालक-बलिकाओं को सेक्स से दूर रखने के प्रयास होने चाहिए। सादा वस्त्र पहनने, पौष्टिक सात्विक भोजन, यौगिक क्रियाओं, आसन आदि लगाने का कार्यक्रम अनिवार्य करना चाहिए। वर्तमान में सरकार ने कैदियों को जेल में ऐसी ि ाक्षा देनी ाुरू की है जिसका अच्छा परिणाम मिला है। ाारीरिक, मानसिक ाक्ति, ऊर्जा संचय करने के समय को यौन ि ाक्षा में बदल देना, मनुष्य जीवन को बरबाद करना है। वर्तमान में 22 से 25 वर्ष की आयु में ाादी होती है- एक दो वर्ष पहले, इस आयु के कि ाोर-कि ाोरियों के लिए यौन ि ाक्षा तथा पारिवारिक जीवन की वास्तविकता का ज्ञान कराने हेतु अलग से ऐसे केन्द्र खोले जायें जहाँ भारतीय संस्कृति के नैतिक ि ाक्षा के ग्रन्थों द्वारा इस प्रकार की ि ाक्षा दी जाए।

अपने भील भाइयों को ईसाइयों के चंगुल से बचाएँ

–सत्यश्रवा

महर्षि दयानन्द एक दूरद ार्शी महापुरुष थे। राजस्थान के रजवाड़ों में धर्मप्रचार करते हुए जीवन के अंतिम दिनों में वे उदयपुर पधारे। उदयपुर के चारों ओर वीर िशरोमणि महाराणा प्रताप की सेना के योद्धा, भील जनजाति के वं ाज बहुतायत में निवास करते हैं। इन्हीं भीलों के दे ाभक्त पूर्वजों ने अपने बाणों के अचूक नि ाानों से, हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध में मुग़ल सेना के छक्के छुड़ा दिये थे और समस्त घाटी को ात्रु सैनिकों की ला ाों से पाट दिया था। खेद है कि इस वीर जाति के वं ाज आज अि ाक्षा, अंधवि वासों, व्यसनों, कुरीतियों और गरीबी की मार से मजबूर होकर लोभ–लालच और डर के कारण धड़ाधड़ ईसाई बनते जा रहे हैं।

महर्षि ने आज से सवा सौ वर्ष पहले ही इस बात को समझ लिया था और अपने दे ा की इस वीर जाति की दुर्द ाा देखकर उन्हें मर्माहत पीड़ा होती थी। एक दिन एक श्रद्धालु ब्राह्मण ि ाष्य के सामने अपनी पीड़ा को महर्षि ने निम्नलिखित ाब्दों में व्यक्त किया था – "आपको पें ान मिलती है। उसमें पुत्र–पौत्र का परिपालन भलीभाँति हो सकता है। आप ब्राह्मणवं ाीय हैं। पूर्व काल में आपके पुरातन पुरुष जगद्गुरु समझे जाते थे। वे संसार के उपकार में जी–जान से लगे रहते थे। आपके लिए भी उनके चरण–चिह्नों पर चलना उचित है। अपने पूर्वजों की भाँति परोपकार का व्रत धारण कीजिए और कटि बाँधकर भीलों की बस्तियों में चले जाइये। वे दिनों–दिन ईसाई होते चले जा रहे हैं। उन्हें अपनी इच्छानुसार ई वरभक्ति का उपदे ा देकर किसी प्रकार ईसाइयों के पंजे से बचाइए। आर्यजाति के छिलते हुए तलुओं की, टूटती हुई अंगुलियों की और कटते हुए पाँवों की रक्षा कीजिए।"

उस ब्राह्मण के तो ऐसे भाग न थे, जो ऋषिवचनों को सुनता परन्तु एक युवा भील ने उन्हीं दिनों स्वामीजी के द र्ान किये। उनसे दीक्षा ली और उनके आदे ा से बाँसवाड़ा के निकट माही नदी के बीहड़ों में बसे सैकड़ों ग्रामों में अपने भील भाइयों को ाराब-माँस, बाल-विवाह, बहुविवाह आदि दुर्व्यसनों, बलिप्रथा जैसे अंधवि वासों तथा हत्या, चोरी आदि अपराधों से दूर करने का बीड़ा उठाया। गोविन्द गुरु नामक इस भील ने ग्राम-ग्राम में हवन करने की प्रथा भी डाली। इस प्रकार गोविन्द गुरु ने महर्षि दयानन्द के आदे ा का जन्म-भर पालन किया। आज भी इस क्षेत्र के ग्रामीण गोविन्द गुरु की देवता के समान पूजा करते हैं।

पिछली ाताब्दी के मध्य में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान एक युवक भरी जवानी में उत्तरप्रदे ा के इटावा जिले से आकर कुछ समय तक मालवा क्षेत्र में रहकर, इस भील क्षेत्र में आया। आजन्म बाँसवाड़ा, कु ालगढ़ तथा झाबुआ जिले के बामनिया गाँव में डेरा डालकर भीलों में ि ाक्षा का प्रचार किया, इन्हें कुरीतियों और अंधवि वासों से बाहर निकाला, रजवाड़ों तथा सेठ साहूकारों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों तथा बेगारी से मुक्ति दिलाई तथा ाराब और माँस छोड़ने का संकल्प लेने वाले लाखों भीलों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) दिये। इसके साथ-साथ इनकी अि ाक्षा से लाभ उठाकर लेन-देन में ठगी और बेईमानी करने वाले सेठों, साहूकारों, बनियों के अत्याचारों से भी इन्हें सावधान किया। इससे यहाँ के दुकानदार इनके विरोधी हो गए।

भील युवकों में अन्याय के खिलाफ़ एकजुट होकर खड़ा होने का साहस भी स्वनामधन्य मामा बाले वर दयाल नामक इस महापुरुष ने पैदा किया। इनके हितों की खातिर मामाजी ने पं. जवाहरलाल नेहरु तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी से भी टक्कर ली और अनेक माँगें मनवाईं।

भील समुदाय के आराध्य मामाजी का 36 वर्ष पूर्व ही देहावसान हुआ है। बामनिया गाँव में उनके आश्रम में स्थापित प्रतिमा पर प्रतिवर्ष भारी मेला लगता है, जिसमें हजारों भील स्त्री-पुरुष रंगारंग पो ाकों में सज-धजकर, ढोल-नगाड़ों के साथ सम्मिलित होते हैं और मामाजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

परन्तु आज उदयपुर, चित्तौड़, रतलाम, झाबुआ तथा धार आदि जिलों में बहुसंख्या में बसनेवाले भील और भिलाना जाति के इन दीन-दुःखियों, दरिद्रनारायण की, न तो दयानन्द के आर्यसमाज ने और न ही वि व हिन्दू परिषद् आदि संस्थाओं ने वि ोष सुध ली है। कुछ काम सार्वदे ाक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के थांदला (झाबुआ), बाँसबाड़ा तथा कु ालगढ़ आश्रमों द्वारा छात्रावासों, विद्यालयों, बालबाड़ियों इत्यादि के माध्यम से तथा वनवासी कल्याण आश्रम और सेवा भारती द्वारा संचालित सैकड़ों एकल विद्यालयों एवं अन्य प्रकल्पों के माध्यम से अव य हो रहा है। इसकी प्र ांसा होनी ही चाहिए, परन्तु यह सब काम ऊँट के मुँह में जीरे के समान है।

यह समूचा क्षेत्र इतना विस्तत, काम इतना वि ाल और समस्या इतनी विकट है कि इसका समाधान युद्ध स्तर पर, सुनियोजित योजना बनाकर, ही संभव है। इस क्षेत्र में आर.एस.एस. की भारी ाक्ति है। उनके पास बड़ी संख्या में समर्पित कार्यकर्ता भी हैं। इस क्षेत्र के रतलाम, नागदा, कोटा, उज्जैन, इन्दौर, मह, बाँसवाड़ा, उदयपुर इत्यादि नगरों में आर्य विद्यालय हैं तथा चित्तौड़गढ़ और हो ांगाबाद में गुरुकुल भी हैं। उदयपुर में श्री मद्दयानन्द सत्यार्थप्रका ा न्यास जैसी सुद़ढ़ संस्था भी है। आर्यसमाज और आर.एस.एस. की विविध संस्थाएँ यदि मिलजुलकर सुनियोजित तरीके से इस क्षेत्र की तरफ ध्यान दें तो इस वीर जाति को ईसाईकरण से बचाया जा सकता है, अन्यथा जैसा

कि एक सरकारी रिपोर्ट के हवाले से नई दुनिया, इन्दौर ने बताया था कि दस वर्षों में झाबुआ जिले में ईसाइयों की संख्या 80% बढ़ी है। अगले दस वर्षों में यह संख्या पुनः इतनी ही और बढ़ जाएगी।

महर्षि की उपर्युक्त मर्मान्तक पीड़ा से प्रभावित होकर मामा बाले वरदयाल की कर्मभूमि रहे इस क्षेत्र के सबसे पिछड़े और निर्धन भीलबहुल जिले के बामनिया गाँव में एक नवगठित परोपकारी न्यास ने भील छात्रों के लिए एक छात्रावास आरम्भ किया है। इस छात्रावास में नाममात्र का शुल्क लेकर निर्धन छात्रों को निवास, भोजन, शिक्षा सहायता तथा भारतीय संस्कृति के अनुरूप संस्कार देने की व्यवस्था की गई है, ताकि ये छात्र स्वयं तथा अपने गाँव वालों को ईसाई होने से बचा सकें। इस छात्रावास को एक सेवाभावी सेवानिवत प्राचार्य दिल्ली से आकर अपनी सेवाएँ मानदरूप में दे रहे हैं। अन्य सेवाभावी महानुभावों का भी स्वागत है। उदारमना, धर्मप्रेमी, दानी महानुभावों, आसपास के समाजसेवी संगठनों, आर्यसमाजों तथा परोपकारी न्यासों को भी इस पुनीत कार्य में सहायता के लिए आगे आना चाहिए।

आओ! हम ऋषिवर की पीड़ा को समझें, अपने भील भाइयों को ईसाइयों के चंगुल से बचाएँ।

ई वर करे! भीलों में से ही कोई गोविन्दगुरु बनकर सामने आए तथा कोई मामा बाले वर दयाल पुनः इस क्षेत्र को अपनी कर्मभूमि बनाए। तभी "आर्य जाति से पिछड़ते भील भाइयों की रक्षा हो सकेगी।'

महर्षि दयानन्द छात्रावास, रतलाम रोड,
बामनिया-457770 (झाबुआ) म.प्र.

बढ़ती संस्कार-हीनता का कारण : विभक्त परिवार

-आचार्य डॉ. संजयदेव

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार हैं, जहाँ किसी भी बच्चे को उचित संस्कारों में ढालकर मनुष्य बनाया जाता है। भारतीय समाज कृषि प्रधान रहा है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारण संयुक्त परिवारों का वर्चस्व प्राचीनकाल से ही रहा है। ग्रामीण जनजीवन में आज भी संयुक्त परिवार की प्रासंगिकता मौजूद है। आधुनिक औद्योगीकरण का परिणाम संयुक्त परिवारों का विघटन है। कृषि के प्रति मोहभंग होना गाँवों से ाहरों की ओर पलायन ही संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के जन्म का कारण है।

संयुक्त परिवारों में जहाँ व्यक्ति एक साथ एक छत के नीचे रहकर एक-दूसरे का दुःख-दर्द बाँटते हैं, उनमें सहयोग की भावना पनपती है, वहीं भारतीय धर्म, संस्कृति और संस्कारों का जितना सतर्कता से पालन किया जाता है, उतना आज टुकड़ों में बँटे एकांगी परिवारों में नहीं। संयुक्त परिवारों में आज के परिष्कृत, महँगे मनोरंजन के साधनों का उपयोग स्वयं को बहलाने के लिए कम ही देखा जाता है। निकट के संबंधों में आपसी सौहार्द और परस्पर सहयोग की भावना अधिक पाई जाती है, जबकि एकांगी टूटे हुए परिवारों में घर के सदस्य अपना अधिकां ा समय या तो क्लबों में बिताते हैं या टेलिविज़न के सामने मूकद र्क बने उसकी क्रियाओं से स्वयं को आनन्दित करते हैं। एकांगी परिवारों के बच्चे अपना अधिकां ा समय टेलीविज़न के सामने ही बिताते हैं। संयुक्त परिवारों में बच्चे अपने बड़े-बूढ़ों के सामने वार्तालाप करते थे, हँसी-मजाक होता था। दादा या दादी द्वारा कुछ ज्ञानवर्द्धक कथाएँ भी कही जाती थीं, जिनसे बच्चों का नैतिक विकास व उनके ज्ञान में वद्धि होती थी।

परिवार के सदस्यों के अंदर के विचार समझ में आते थे कि वे किस हाल में हैं? भविष्य में क्या करना है? बड़े एकांगी परिवारों में यह सब कुछ लुप्त हो गया है। छोटा परिवार और

सुखी परिवार की प्रासंगिकता के कारण परिवार के सदस्य कम हुए। पति-पत्नी का अधिकां ा समय दफ्तर या बाहर गुजरा करता है। बच्चे को या तो आया संभाला करती है या वो सारा दिन घर में अकेले पड़े टेलीविजन वीडियो गेम में खोये रहते हैं। टेलीविज़न ने एक ऐसी पा चात्य मूल्यों पर आधारित संस्कृति को जन्म दिया है, जो मात्र उपभोक्तावाद को बढ़ावा दे सकती है। एकांगी परिवारों के बच्चे जब जवानी में कदम रखते हैं, तो अनायास ही जिन्दगी की मायूसियों को मिटाने के लिए गलत चीजों का सहारा लेते हैं, जो उन्हें अपराध करने के लिए प्रेरित करती हैं।

संयुक्त परिवार अपने वर्चस्व के कारण परिवारों में गलत कार्यों को होने नहीं देते थे। बुजुर्गों की मान-मर्यादा, उनका सहयोग से भरा नियंत्रण संस्कृति के पतन को रोके रखता था। वे संयुक्त परिवार की प्रथाएँ एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते रहते थे। अब एकांगी परिवारों में इन मूल्यों का अभाव है, और वे उन्हें हस्तांतरित करने में भी असमर्थ हैं। आधुनिक एकांगी परिवारों में सहयोग तो नाममात्र का भी देखने को नहीं मिलता। इन परिवारों के बच्चे तनावग्रस्त रहने के कारण प्रायः भावना ून्य हो जाया करते हैं। भगवान ून्य मनःस्थिति व्यक्ति को अपराधों की ओर ले जाती है।

आज के परिवार बिना कमांडर की सेना के समान हैं। उद्दे यहीन पा चात्य संस्कृति का एक झोंका उन्हें जिस ओर मोड़ देता है, वो उसी ओर चल पड़ते हैं। जिन परिवारों में आद र्ों का अभाव हो, भावनाहीन व नियंत्रण से परे हों, वे भला क्या दे पायेंगे इस समाज को? कौन-सी पौध वे तैयार करेंगे इस समाज के लिए?

आज एकांगी परिवारों की कोई नि चित आचार संहिता नहीं है। एक सदस्य पूर्व की ओर भाग रहा है, तो दूसरा प चिम की ओर। इसका कारण है भोगवादी सुख की चाह तथा स्वयं की इच्छा के सामने बड़ों की आज्ञा को नकार देना। पति और पत्नी के मध्य बढ़ते तनाव का कारण भी यही है। छोटी-सी घर-गहस्थी चलाने में परिवार को ही तबाह कर लेना कितना उचित है? आज बड़े नगरों, महानगरों में ाादी ुदा महिलाओं

पर चढ़ता प्रेम का बुखार अपने स्वर्ग जैसे घर को तबाह करने का एक और कारण है। इस मानसिकता की जड़ भी एकांगी परिवारों से ही उपजी है, जिसका नई पीढ़ी पर कुप्रभाव पड़ रहा है।

आज जो मानसिकता बनती जा रही है, हम या आप चाहकर भी उसे परिवर्तित नहीं कर सकते। आज एकांगी परिवार में जन्मा पुत्र ीघ्र ही अपने पैरों पर खड़ा होकर ादी करके स्वयं की दुनिया अलग बसाना चाहता है। ऐसा क्यों? किसी परिवार में अकेला पुत्र होने पर भी वह अपने माता-पिता के साथ कम ही एडजेस्ट होना चाहता है। निःसन्देह भौतिक सुख की चाह ही उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित करती है। 'मैं और मेरे बच्चे' जैसी संकुचित मानसिकता की प्रवत्ति ने परिवारों के बिखराव को हवा दी है। एकांगी परिवार अपने बच्चों को उतना सब कुछ नहीं दे पाते हैं, जितना संयुक्त परिवार। हाँ, भौतिक सुख-सुविधाएँ बढ़ सकती हैं। जेब खर्च भी अधिक मिल सकता है, पर नैतिकता के स्तर पर हमें क्या मिला?

एकांगी परिवारों में पति-पत्नी के मध्य झगड़ों का क्रम भी बात-बात पर बढ़ जाया करता है। अत्महत्या, फाँसी, हत्या आदि जघन्य अपराध एकांगी परिवारों में निरन्तर बढ़ रहे हैं, जिनका बच्चों पर कुप्रभाव पड़ता है। बच्चे भी गलत मार्ग की ओर अग्रसर होते हैं। आज के पा चात्य संस्कृति प्रधान परिवारों में अपने से बड़ों के लिए छोटों के दिलों में वह सम्मान, आदर विलुप्त हो गया है। चरण स्प र्ा की वह परम्परा, जिसमें सिर्फ आत्मिक तरंगों द्वारा बड़ों का आ ीर्वाद आत्मा से ग्रहण किया जात था, वह परम्परा भी विलुप्त होती जा रही है। आज के परिवार नयी पीढ़ी को वह सब नहीं दे पाते हैं, जिनकी उन्हें जरूरत है। जरूरत है ऐसे स्वस्थ मूल्यों से ओतप्रोत परिवारों की, जो नवसमाज का निर्माण कर सकें तथा हमारे आद र्ा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा कर सकें, जिनमें हमारा आत्मिक संबंध बरकरार रह सके।

दिव्ययुग-62, मिश्र नगर, अन्नपूर्णा मार्ग,
इन्दौर-452009 (म.प्र.)

Aüm

Rishi Dayanand's Disciple Shyamji Krishna Varma

Br. Chitranjan Sawant, VSM

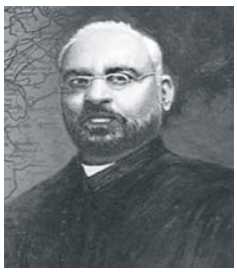

Shyamji Krishna Verma spoke Sanskrit so well that he impressed the Veda Bhashyakar, Swami Dayanand Saraswati immensely. The founder of the Arya Samaj saw in the young student of Sanskrit an immense potential and chose to lead him to the Vedas, the spirit of Nationalism and building independence movement brick by brick. The great Nationalist ascetic Dayanand Saraswati encouraged young Shyamji Krishna Varma to travel to the United Kingdom for higher studies and cultivate the like minded men among Britons to further the cause of independence of India. Great!

Birth and Bringing Up

Shyamji Krishna Varma was born on 4 Oct 1857 at Mandavi, Kuchch, Gujarat in a family with modest means. He received his education in India and England and obtained the degree of B.A. from the Oxford University. He is known as an Indian revolutionary, a laywer, a journalist and above all A Nationalist to his finger tips.

It was his coming in contact with Rishi Dayanand Saraswati that brought young Shyamji Krishna Varma to the Vedic treasure of hymns, Vedic Thought and ignited in him a burning desire to see his motherland, Bharat, free from the overlordship of the British Crown. The young man read Satyarth Prakash written by Swami Dayanand Saraswati and it opened his eyes and filled him with hope for a better future. He made up his mind not to submit to oppression, injustice, racial inequality and class hatred. That explains his brush with the British bosses and their conservative Press both in India and the United Kingdom.

His early education was as normal as that of any student in the backward region of semi desert called Kuchch. But it was the university education in Balliol College, Oxford University that

broadened his outlook on both the national and international issues. It was in the Oxford University campus that he imbibed the spirit of freedom and to resist doggedly discrimination and suppression - physical, mental and spiritual.

Shyamji Krishna Varma acquired the spirit of fierce freedom from the numerous writings of his Guru, Swami Dayanand Saraswati. Besides Satyarth Prakash, he read the Rigvedadi Bhashya Bhumika and Sanskar Vidhi penned by the Rishivar. Thus he acquired an immense insight into the Vedic literature and used the knowledge in depth in various sermons that he delivered across Bharat to enlighten the masses.

No wonder the Pandits of Kashi chose to honour Shyami Krishna Varma with the title of PUNDIT, the first non-Brahmin to have been honoured thus.

Exile Self Imposed

During his stay in India from time to time, he practiced law in Bombay; he was the Diwan of Ratlam, Diwan of Maharana of Udaipur and finally Diwan of Junagarh. In the last appointment he had a serious spat with a British Agent who tried to throw the weight of the Empire on the young nationalist's mind but the result was disastrous. It shook the faith of Shyamji Krishna Varma in the British sense of fairplay and justice. Of course, in between the last two assignments as Diwan, he had moved to the headquarters of the Arya Samaj and the place where Rishi Dayanand had breathed his last, Ajmer to practice law in the British courts where he had found life quite amenable and it had brought a sense of job satisfaction to him.

Shyamji Krishna Varma saw the British character through and through during his stint as Diwan of the Junagarh State. He had a heart to heart talk with his wife, Bhanumati-a sagacious advisor to her dear husband-and the couple took the hard decision of leaving their motherland for good. Indeed the new life in the United Kingdom was dedicated to the cause of freedom of India. They swore by the word Independence and devoted all their time, attention and earnings in furtherance of the cause.

British Base for Indian Independence

Shyamji Krishna Varma spent his life's earnings in buying a

big house on the Cromwell Avenue to be a hostel for the Indian freedom fighters based in England and the Indian students who went there for higher studies but had no place to stay. The racial discrimination against Indians by the stiff necked British intelligentsia, politicians, bureaucrats and even some academics made it difficult for the Indian students to find a residential place in London or any other metropolitan city. It was this discriminatory attitude of the white people against the coloured people that set our great patriot, Shyamji Krishna Varma thinking. He put his thought into action and founded the famous Indian House that provided board and lodging to 25 Indian students, may be more on a sharing basis. Eminent freedom fighters like Vir Savarkar, Madam Bhikaji Cama, Lala Hardayal, Madan Lal Dhingra were lodging in the said India House during their sojourn in London.

The journalistic activities of our great patriot were getting too hot to handle by the White Hall in London. It was his political articles that the liberal press lapped up and caused consternation to the rulers of the British Empire. The British Imperialists considered in infra dig to answer the valid points raised by a subject of His Majesty the King, Emperor of India. They considered the brown Indians as their personal servants and inferior persons who were not fit to be called human beings.

The Indian Home Rule Society founded by Shyamji Krishna Varma in furtherance of the cause of freedom of India was the proverbial last straw on the camel's back. Enough was enough, so said the stiff upper lip bureaucrat sitting in the White Hall from where they ruled the British Empire where sun never set. How could that little man branded as a nationalist called Shyamji Krishna Varma throw a gauntlet to the British throne. The machine was set in motion to arrest him and deport to India for trial on a charge of sedition against the Crown.

Shyamji Krishna Varma sniffed it and left for France before the warrant of arrest could be put into effect. Our Hero knew that the National Congress would never come to his rescue, leave lone issuing a statement supporting the good cause being done

by him for the freedom of the motherland. He loathed the subservient attitude of leaders of the Congress party and condemned conciliatory resolutions passed by them thanking the monarch for protecting, preserving and defending India against the onslaught of enemies of the Empire. It is amazing that the Indian National Congress today too displays a weak image while dealing with aggressive neighbours like Pakistan and China. The Congress leaders of today have not been able to live down that slavish approach of their predecessors.

Paris-Geneva : New Shelters

"Loyalty to Great Britain is Treachery to India" so said Henry Hyndman, a Socialist thinker of England who supported the nationalist movement of Shyamji Krishna Varma. Thus encouraged the great Revolutionary of ours preferred to leave the shores of England rather than bend to the diktats of the British rulers. So, the couple, Shyamji and Bhanumatiji landed in France where they were well received. The Press was also supportive. Proverbially the French and the British remain at daggers drawn. The British have not been able to forget that once upon a time France ruled Europe. The French have not been able to forget that their popular Emperor, Nepoleon Bonaparte as imprisoned by the British Imperialists twice and eventually he breathed his last on a deserted island. Thus the French were not against the freedom movement in India.

However, an Entente between France and England changed the international situation completely. The stay of Shyamji Krishna Varma on the soil of France became untenable. The couple made a well considered decision to move to a neutral country, Switzerland and lived in Geneva from 1914 when the First Great War commenced. Although he was not permitted to indulge in political activities but he managed to remain in touch with the Indian Freedom Fighters and helped them whenever possible.

Both he and his spouse, Bhanumati Ji were dogged with poor health and hospitalization. In 1930 our great revolutionary Shyamji Krishna Varma expired in a hospital. After a few years, Bhanumati ji too followed suit.

The Great Revolutionary had deposited enough money with the crematorium to preserve the ashes of both husband and wife for one hundred years or until a patriot from India comes to receive the Urn to take to a free India.

India became independent but no one thought of bringing the ashes of great revolutionary home to find a permanent resting place. This national duty was done by Narendra Bhai Modi in 2003 when he brought the Urn containing ashes of the Revolutionary Shyamji Krishna Varma and his devoted wife, Bhanumatiji.

The Government of Gujarat under guidance of Chief Minister, Narendra Damodardas Modi built a Kranti Teerth near the birth place of the great Indian Revolutionary and the Urn containing ashes have been placed with honour that the Indian Nation owed to the illustrious couple.

A new township has come up in Kuchch and it stands named after Shyamji Krishna Varma. The University of Kuchch too carries the illustrious name as its prefix. The youth of India is encouraged to go to the Kranti Teerth and draw inspiration from the deeds of patriotism of Shyamji Krishna Varma.

Email.sawantchitranjan@yahoo.com
Mobile : 9811173590

- Nobody who ever gave his best regretted it.
- Laziness may appear attractive, but work gives satisfaction.
- As soon as you trust yourself, you will know how to live.
- From error to error one discovers the entire truth.
- They think too little who talk too much.
- Freedom is nothing else but a change to be better.
- The man who forgives is far stronger than the man who fights.
- The greatness is not in what we do but how we do.
- Kindness is the golden chain by which people are bound together.
- Real education is that which enables one to be self-reliant.

'Great Battle' veterans forgotten 'Indian Army' Played Crucial Role At Kohima

- Manimughdha S. Sharma

The year was 1943.Phukon Chandra Rabha had a quiet life in his village Bisonigaon in Assam's Lakhimpur district. Although his father was a farmer, Rabha didn't want to end up in the fields like him. Instead, he followed his dreams and enlisted as a sepoy in the then British Indian Army. He was assigned to the newly raised 1st battalion of the Assam Regiment. Little did the 23-year-old know that he was soon going to be involved in an epic battle that was destined to become a part of military folklore.

The Battle of Kohima, almost seventy years after it took place, was voted as Britain's greatest battle in a contest organized by the National Army Museum. The result has not only surprised people in England who thought Waterloo was their greatest feat, but also in India where the vast majority of the population remains unaware that such a crucial battle was fought on Indian soil and that there were valiant soldiers like Rabha.

The battle began on April 3,1944, when 15,000 men of the 31st division of the Japanese 15th Army under Lieutenant General Kotoku Sato attacked Rabha's garrison, that had a fighting force of only 1,500 men. Despite being outnumbered 10 to one, the men stood their ground. The fighting was bloody and hand-to-hand most of the time. Things soon boiled down to a point when even cooks, orderlies, drivers and other non-combatants had to pick up whatever they could find–guns, sticks, pickaxes, pikes and frying pans–and join the fight. For nearly two weeks, the men held out until relief came in the form of the 61st Indian Infantry Brigade with units of the Royal Indian Artillery, and the British 2nd Division.

"My brother Morris was part of this relief force. He was wounded. At that time, I was at Arakan, getting ready for an amphibious assault on Ramree Island (Burma). There was confusion about Japanese movement in the days leading to final showdown. We thought only a Japanese infantry brigade was on the move. But at Sangshak, after the encounter with the infantry brigade of Major General Shigesaboru Miyazaki, we realized that it was not just an infantry brigade that was coming, a whole bloody division was on the move," says Lieutenant General (retd) JFR Jacob, who was with the Royal Indian Artillery during the time.

As for Rabha, he died fighting the enemy on May 2, 1944. He was later burled in the Kohima War Cemetery where a granite headstone that has his regimental insignia and 'Om Bhagavate Namah' inscribed in Golden letters honours his grave.

Seventy years on, the recognition of the importance of the Battle of Kohima by the British has made retired soldiers and WWII veterans happy, but they feel the Indian government has done precious little to honour the Indian soldiers without whom WWII could have had a very different end.

"We are the 'Forgotten Army'. We were never remembered by the world or by our countrymen. And now, when the world had started talking about us, we are at the fag end of our lives," says General Jacob, now 91. He proudly wears the commendation badge given to him by the Queen of England which calls him "Her Majesty's Armed Forces Veteran".

About 2.5 million Indian troops fought in WWII - a force bigger than the present standing army of 1.2 million. "Britain couldn't have taken Eritrea, Abyssinia, Italy, Libya, Burma, Malaya and Singapore without the Indian troops. For these men, it was a fight where they had no stakes," says military scholar, Major General (retd.) Afsir Karim, a veteran para

trooper. "Moved by patriotic fervour, "Independent India only gave importance to the INA; but the war in the east was strictly between the Japanese and the British Empire troops. The INA played an inconsequential role. In all the propaganda the Indian Army was forgotten. When you see those memorial parades in the West, where even heads of states salute WWII veterans, you realize we don't have anything like that in India.

VEDAS SAY THAT THE RULER MUST PUNISH THE RAPIST

उत्सऽक्थ्या अवगुदं धेहि समञ्जि चारया वषन्।
यः स्त्रीणां जीवभोजनः।। **(यजु.23.21)**

हे ाक्तिमान् राजन् जो पापी लोग स्त्रियों के साथ व्यभिचार एवं बलात्कार करके उनका जीवन नष्ट करने वाले हैं.... उन्हें पैर ऊपर और सिर नीचे करके उल्टा लटका कर ताडन करना चाहिये और इस प्रकार अपने राष्ट्र में न्याय का संचार करना चाहिये।

It is the utmost duty of the King/Ruler to punish those Sinners (Rapists), who destroy the life of a woman by Illicit conduct or Rape, by hanging them upside down and by beating them so that Morality, Peace and Justice prevail in his kingdom

-Yajur Veda 23.21

वयं राष्ट्रे जागयाम पुरोहितः।

यजुर्वेद 9–23

हम सब जागत होकर राष्ट्र की उन्नति करें।

Date of Pubn. : 30.06.2014 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 July 2014
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

नमः म्भवाय च मयोभवाय च नमः ंकराय च मयस्कराय च।
नमः ि ावाय च ि ावतराय च।।1 यजु. 16/41।।
ऋषि – परमेष्ठी प्रजापतिर्वादेवाः, देवता–रुद्राः, छन्द–स्वराडार्षीबहती

अर्थ – हे कल्याणारी प्रभो! आप ंभव' मोक्ष सुखस्वरूप और मोक्ष सुख प्रदाता हो। आप ' ंकर' हो जीवों का कल्याण करनेवाले हो। आप ही 'मयस्कर' अर्थात् मन, इन्द्रिय, प्राण और आत्मा को सुख देने वाले हो। आप 'ि ाव' मंगलमय हो तथा आप 'ि ावतर' अत्यन्त कल्याणस्वरूप और कल्याणकारी हो। अतः हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं। श्रद्धाभक्ति से जो लोग ई वर को नमस्कार आदि करता है वह भी मंगलमय हो जाता है।

Oh Almighty God, you are Blissful and You arrange the welfare of all living beings in this world. You provide us the highest bliss after emancipation. We offer our salutation to You. Oh Lord, You are the giver of worldly happiness to us. You alone give solace to our mind, senses, innerself and souls. We offer our obeisance to You again and again. The devotee who, with sincerity and faith offers You obeisance, himself becomes auspicious. May we in this way, by Your grace attain auspiciousness in our life.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58